ॐ गणेशाय नमः
ॐ दुर्गाय नमः
🪷

माँ दुर्गा हवन विधि

राजर्षि जी ने नवरात्री में कई साधनाओं में माँ दुर्गा का हवन करने का उल्लेख किया है। इस आलेख में माँ दुर्गा के हवन करने की विधि बतायी जा रही है।

हवन के लिए आवश्यक सामग्री

1. ताँबे का हवन कुंड - छोटा भी चलेगा. (लोहे या स्टील के बने होमकुंड का प्रयोग न करें)
2. हवन चम्मच (ये एक छोटा चम्मच होता है जिसका हत्था लंबा सा होता है) - लकड़ी या ताँबे के चम्मच का प्रयोग करें
3. घी (लगभग 250 ग्राम)
4. कपूर
5. कला तिल
6. होम सामग्री (500 ग्राम)
7. सिंदूर या कुमकुम
8. हल्दी
9. चंदन
10. अक्षत के लिए अखंडित चावल
11. फूल
12. अगरबत्ती
13. **धारापात्र या पंचपात्र** में स्वच्छ पानी
14. किशमिश
15. 1 दीपक का सामान (दीपक, तेल, बाती)
16. माचिस की डिब्बी
17. आम की लकड़ी या कोपरा (सूखा नारियल)
18. प्रसाद चढ़ाने के लिए मिठाई
19. एक टुकड़ा गुड
20. छोटा लाल कपड़ा

तैयारी के निर्देश

1. हवन के लिए सदा सूखी लकड़ी का ही प्रयोग करना चाहिए। सुनिश्चित कर लें की लकड़ी में नमी न हो
2. लकड़ी के प्रयोग से हवन की अग्नि तेज हो जाती है। यदि आप ऐसी किसी जगह रहते हैं जहाँ धुएँ इत्यादि की दिक्कत है तो आप पूरा हवन सूखे नारियल के कोपरे में भी कर सकते हैं।
3. अग्नि प्रज्जवलित करने के लिए कपूर पास में ही रखें
4. दो कटोरों में पिघला हुआ घी अलग करके रख लें: एक कटोरे में सादा घी और दूसरे कटोरे में घी में थोड़ा सा काला तिल मिला के रख लें। काले तिल वाले घी से हवन की मुख्य आहुतियाँ दी जायेंगी।

Kamakhya Bhairava Upasaka Foundation

5. आहुति देने के लिए लकड़ी या ताम्बे के हवन-चम्मच का प्रयोग करना उचित रहता है।
6. एक तेल या घी का दीपक बनायें
7. **पूर्णाहुति** बना कर रख लें: गुड़ के एक छोटे टुकड़े को छोटे लाल कपड़े में बाँध कर रख लें

पूर्वांग

1. हवन कुंड को ऐसे रखें जिससे आप पूर्व या उत्तर या ईशान कोण की तरफ़ मुँह करके बैठे हों।
2. श्री गणेश, कुलदेवता या कुलदेवी और इष्टदेव को मानसिक प्रणाम करें; सभी ऋषियों और गुरु को प्रणाम करें और उनसे प्रार्थना करें कि वो आपके हवन को सार्थक करें।
3. श्री गणेश से प्रार्थना करें की वो सभी विघ्नों को हर लें। माँ कामाख्या, माँ तारा और बटुक भैरव भगवान से प्रार्थना करें कि वो आपके हवन को सफल करें। अब इस श्लोक से श्री गणेश भगवान से प्रार्थना करें।

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्व-विघ्नोपशान्तये अगजानन-पद्मार्कं गजाननं अहर्निशम् अनेकदं तं भक्तानां एकदन्तम् उपास्महे वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि-समप्रभ निर्विघ्नम् कुरु मे देव सर्व-कार्येषु सर्वदा	śuklāmbaradharaṃ viṣṇuṃ śaśivarṇaṃ caturbhujam prasannavadanaṃ dhyāyet sarva-vighnopaśāntaye agajānana-padmārkaṃ gajānanaṃ aharniśam anekadaṃ taṃ bhaktānāṃ ekadantam upāsmahe vakratuṇḍa mahākāya sūryakoṭi-samaprabha nirvighnam kuru me deva sarva-kāryeṣu sarvadā

4. पानी की शुद्धि के लिए - पानी के लोटे के ऊपर अपना दाहिना हाथ रखें (ऐसे रखें की हाथ से पानी ना छुए) और ये मंत्र बोलें

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वति । नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥	gaṅge ca yamuneścaiva godāvari sarasvati । narmade sindhu kāveri jale'smin sannidhiṃ kuru ॥

5. अब 11 बार इस बीज मंत्र का उच्चारण करें - वं (Vam)
6. आचमन करें
7. बिना किसी मंत्र के प्राणायाम करें
8. अब सिंदूर को घी में मिला कर, हवन कुंड के अंदर चित्र में दर्शाए हुए यंत्र को बनायें। इस यंत्र में एक उल्टा त्रिकोण बनाते हैं, जिसके चारों ओर एक वृत्त बनाते हैं और उसके चारों ओर एक वर्ग बनायें। इस यंत्र के मध्य में माँ दुर्गा को उपस्थित मानें और उन्हें एक फूल, कपूर और सिंदूर चढ़ायें।

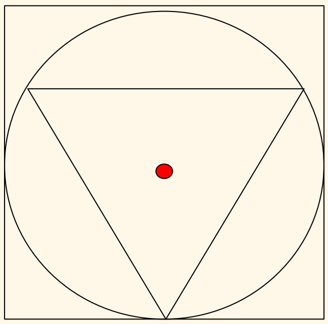

साधारण संकल्प

अपने दाहिने हाथ में थोड़े से अक्षत लेकर मुट्ठी बंद कर लें। फिर अपने बायें हाथ की हथेली को ऊपर की तरफ़ रखते हुए, अपनी दाहिनी जांघ पर रखें और फिर उसके ऊपर अपना दाहिनी मुट्ठी रखें और अपना संकल्प कहें।

संकल्प के लिए आप अपने शब्दों का प्रयोग भी कर सकते हैं या इस निम्नलिखित छंद का प्रयोग करें

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षय-द्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थम् श्री-दुर्गा-परमेश्वरी-प्रसाद-सिद्ध्यर्थम् अद्य शुभ-दिने शुभ-मुहूर्ते श्री-दुर्गा-परमेश्वरी-होम-कर्म यथा-शक्ति करिष्ये	mamopātta-samasta-durita-kṣaya-dvārā śrī-parameśvara-prītyartham śrī-durgā-parameśvarī-prasāda-siddhyartham adya śubha-dine śubha-muhūrte śrī-durgā-parameśvarī-homa-karma yathā-śakti kariṣye

अग्नि प्रतिष्ठापन

1. लकड़ी या कोपरा, हवन के लिए जिस भी चीज़ का प्रयोग कर रहें हो, उसे हवन कुंड में व्यवस्थित कर के रख लें। बीच में थोड़ा सा कपूर रख लें।
2. दीपक जलायें।
3. अगरबत्ती का प्रयोग करते हुए, दीपक की ज्योत से बीच में रखें कपूर को प्रज्ज्वलित करें और कहें:

ॐ भूर्भुवः सुवरों	oṃ bhūr bhuvaḥ suvaroṃ

आवाहन

अब हवन कुंड में 8 बूँद घी डालें और हर बूँद के साथ ये मंत्र कहें:

ॐ भूर्भुवः सुवः स्वाहा	oṃ bhūr bhuvaḥ suvaḥ svāhā

अब इस मंत्र को 16 बार कहें:

रं अग्नये नमः स्वाहा	raṃ agnaye namaḥ svāhā

दिक्पाल आहुति

दिक्पाल देवता सभी दस दिशाओं की रक्षा करतें हैं। निम्नलिखित आहुतियाँ उनके लिए दी जायेंगी।
पूर्व दिशा से प्रारंभ करते हुए दक्षिणावर्त (clockwise) जाते हुए, हवन कुंड की परिधि पर हर दिशा में एक सिंदूर का टीका लगायें और निम्नलिखित मंत्र पढ़ें। इसके लिए अक्षत या फूल का प्रयोग भी कर सकते हैं।

Kamakhya Bhairava Upasaka Foundation

जब आप ॐ अग्नये नमः कहें, तब एक चुटकी सिंदूर अग्नि में डाल दें और जब ॐ आत्मने नमः कहें तब सिंदूर का एक टीका अपने हृदय (छाती) पर लगायें ।

Placement Indicator		**Mantra**
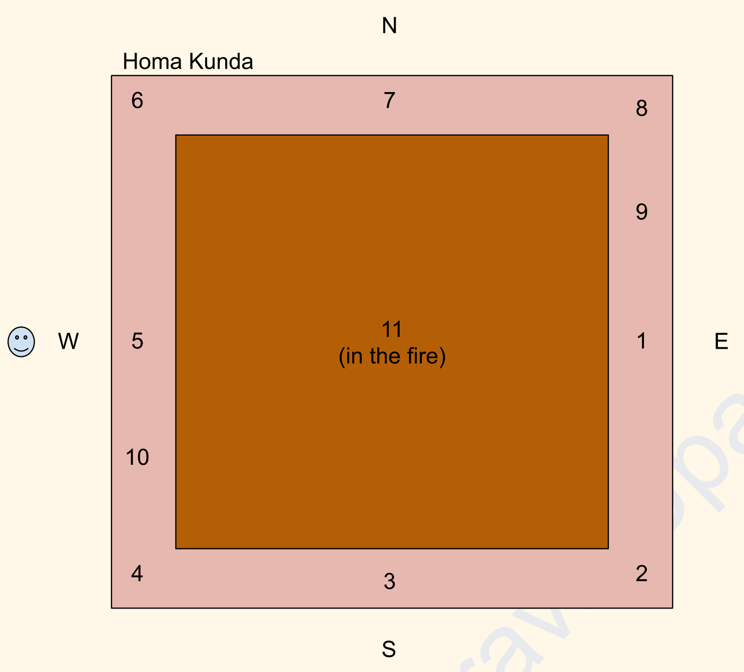	1	ॐ इन्द्राय नमः (oṃ indrāya namaḥ)
	2	ॐ अग्नये नमः (oṃ agnaye namaḥ)
	3	ॐ यमाय नमः (oṃ yamāya namaḥ)
	4	ॐ निऋतये नमः (oṃ nirṛtaye namaḥ)
	5	ॐ वरुणाय नमः (oṃ varuṇāya namaḥ)
	6	ॐ वायवे नमः (oṃ vāyave namaḥ)
	7	ॐ सोमाय नमः (oṃ somāya namaḥ)
	8	ॐ ईशानाय नमः (oṃ īśānāya namaḥ)
	9	ॐ ब्रह्मणे नमः (oṃ brahmaṇe namaḥ)
	10	ॐ शेषाय नमः (oṃ śeṣāya namaḥ)
एक चुटकी सिंदूर अग्नि में डालें		ॐ अग्नये नमः (oṃ agnaye namaḥ)
सिंदूर का टीका छाती (हृदय) पर लगायें		ॐ आत्मने नमः (oṃ ātmane namaḥ)

तैयारी

अब इन मंत्रों के साथ अग्नि में घी की आहुति दें:

ॐ प्रजापतये स्वाहा, प्रजापतये इदं न मम	oṃ prajāpataye svāhā, prajāpataye idaṃ na mama
ॐ इन्द्राय स्वाहा, इन्द्राय इदं न मम	oṃ indrāya svāhā, indrāya idaṃ na mama
ॐ अग्नये स्वाहा, अग्नये इदं न मम	oṃ agnaye svāhā, agnaye idaṃ na mama

Kamakhya Bhairava Upasaka Foundation

ॐ सोमाय स्वाहा, सोमाय इदं न मम	oṃ somāya svāhā, somāya idaṃ na mama
ॐ भरैवाय नमः स्वाहा	oṃ bhairavāya namaḥ svāhā
ॐ कामाख्या देव्यै नमः स्वाहा	oṃ kāmākhyā devyai namaḥ svāhā
ॐ तारा देव्यै नमः स्वाहा	oṃ tārā devyai namaḥ svāhā
ॐ दुर्गा देव्यै नमः स्वाहा	oṃ durgā devyai namaḥ svāhā
ॐ कार्तिकेयाय नमः स्वाहा	oṃ kārtikeyāya namaḥ svāhā
ॐ गुरुभ्यो नमः स्वाहा	oṃ gurubhyo namaḥ svāhā
ॐ परमगुरुभ्यो नमः स्वाहा	oṃ paramagurubhyo namaḥ svāhā
ॐ परमेष्ठिगुरुभ्यो नमः स्वाहा	oṃ parameṣṭhigurubhyo namaḥ svāhā
ॐ परापरगुरुभ्यो नमः स्वाहा	oṃ parāparagurubhyo namaḥ svāhā
ॐ शिवाय नमः स्वाहा	oṃ śivāya namaḥ svāhā
ॐ गहृदेवताभ्यो नमः स्वाहा	oṃ gṛhadevatābhyo namaḥ svāhā
ॐ कुलदेव्यै नमः स्वाहा	oṃ kuladevyai namaḥ svāhā

नवग्रह आहुति

अब इन मंत्रों के साथ नवग्रह देवताओं को घी की आहुति दें:

ॐ सूर्याय नमः स्वाहा	oṁ sūryāya namaḥ svāhā
ॐ चन्द्राय नमः स्वाहा	oṁ candrāya namaḥ svāhā
ॐ मङ्गलाय नमः स्वाहा	oṁ maṅgalāya namaḥ svāhā
ॐ बुधाय नमः स्वाहा	oṁ budhāya namaḥ svāhā
ॐ बृहस्पतये नमः स्वाहा	oṁ bṛhaspataye namaḥ svāhā
ॐ शुक्राय नमः स्वाहा	oṁ śukrāya namaḥ svāhā
ॐ शनैश्चराय नमः स्वाहा	oṁ śanaiścarāya namaḥ svāhā
ॐ राहवे नमः स्वाहा	oṁ rāhave namaḥ svāhā

Kamakhya Bhairava Upasaka Foundation

ॐ केतवे नमः स्वाहा	oṁ ketave namaḥ svāhā

श्री प्रजापति से अभी तक हुई किसी भी त्रुटियों के लिए क्षमा माँगें:

ॐ प्रजापतये नमः स्वाहा	oṃ prajāpate namaḥ svāhā

श्री गणेश का अग्नि में आवाहन

1. इस मंत्र के साथ श्री गणेश का होम की अग्नि में आवाहन करें

ॐ श्रीमहागणपतिप्राणशक्त्यै नमः अत्रागच्छ। आवहितो भव। स्थापितो भव। सन्निहितो भव। सन्निरुद्धो भव। अवकुण्ठितो भव। देव प्रसीद प्रसीद।	oṃ śrīmahāgaṇapatiprāṇaśaktyai namaḥ atrāgaccha। āvahito bhava। sthāpitho bhava। sannihito bhava। sanniruddho bhava। avakuṇṭhito bhava। deva prasīda prasīda।

2. अब इन मंत्रों के साथ अग्नि में पंच उपचार पूजा करें:

एक चुटकी सिंदूर या चंदन अग्नि में डालें	लं पृथिव्यात्मने नमः। गन्धं समर्पयामि।	laṃ pṛthivyātmane namaḥ। gandhaṃ samarpayāmi।
एक फूल अग्नि में डालें	हं आकाशात्मने नमः। पुष्पं पूजयामि।	haṃ ākāśātmane namaḥ। puṣpaṃ pūjayāmi।
अगरबत्ती जलायें और अग्नि को दिखायें	यं वाय्वात्मने नमः। धूपं आघ्रपयामि।	yaṃ vāyvātmane namaḥ। dhūpaṃ āghrapayāmi।
दीपक को अग्नि को दिखायें	रं अग्न्यात्मने नमः। दीपं दर्शयामि।	raṃ agnyātmane namaḥ। dīpaṃ darśayāmi।
भोग प्रसाद की मिठाई अग्नि में डालें	वं अमृतात्मने नमः। नैवेद्यं समर्पयामि।	vaṃ amṛtātmane namaḥ। naivedyaṃ samarpayāmi।
एक पुष्प और अक्षत अग्नि में डालें	सं सर्वात्मने नमः। सर्वोपचारान् समर्पयामि।	saṃ sarvātmane namaḥ। sarvopacārān samarpayāmi।

3. अब २१ बार इस मंत्र के साथ आहुति दें:

ॐ गं गणपतये नमः स्वाहा।	oṃ gaṃ gaṇapataye namaḥ svāhā।

4. गणपति भगवान को कपूर की आरती दिखायें
5. महागणपति की प्रतिष्ठापना इस उद्वासन मंत्र से करें। अपने हृदय की तरफ़ इशारा करते हुए इस मंत्र को कहें:

यथा स्थानम् प्रतिष्ठापयामि	Yathā sthānam pratishthapayami

प्राण प्रतिष्ठापन - श्री दुर्गा परमेश्वरी का अग्नि में आवाहन

1. सर्वप्रथम श्री दुर्गा परमेश्वरी का ध्यान करें

विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कंधस्थितां भीषणां कन्याभि: करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्। हस्तैश्चक्रदरालिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे ॥	vidyuddāmasamaprabhāṁ mṛgapatiskaṁdhasthitāṁ bhīṣaṇāṁ kanyābhiḥ karavālakhēṭavilasaddhastābhirāsēvitām | hastaishcakradarālikhēṭaviśikhāṁścāpaṁ guṇaṁ tarjanīṁ bibhrāṇāmanalātmikāṁ śaśidharāṁ durgāṁ trinetrāṁ bhajē ||

याचण्डी मधुकैटभादिदलनी यामाहिषोन्मूलिनी याधूम्रेक्षणचण्डमुण्डमथनी यारक्तबीजाशनी । शक्तिः शुम्भनिशुम्भदैत्यदलनी यासिद्धिदात्री परा सा देवी नवकोटिमूर्तिसहिता मां पातु विश्वेश्वरी ॥	yā caṇḍī madhukaiṭabhādidalanī yā māhiṣōnmūlinī yā dhūmrēkṣaṇacaṇḍamuṇḍamathanī yā raktabījāśanī | śaktiḥ śumbhaniśumbhadaityadalanī yā siddhidātrī parā sā dēvī navakōṭimūrtisahitā māṁ pātu viśvēśvarī |

2. फिर इन मंत्रों का उच्चारण करें:

अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठापन मन्त्रस्य, ब्रह्मा विष्णु महेश्वर ऋषयः ऋग् यजुः सामाथर्वाणि छन्दांसि, श्रीदुर्गा देवता । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं । ॐ हंसः सोऽहं सोऽहं हंसः । श्रीदुर्गायै प्राण इह प्राणः ।	asya śrī prāṇapratiṣṭhāpana mantrasya, brahmā viṣṇu maheśvara ṛṣayaḥ ṛg yajur sāmātharvāṇi chandāṃsi, śrī durgā devatā oṃ aiṃ hrīṃ klīṃ yaṃ raṃ laṃ vaṃ śaṃ ṣaṃ saṃ haṃ laṃ kṣaṃ oṃ haṃsaḥ so'ham so'ham haṃsaḥ śrī durgāyai prāṇa iha prāṇaḥ

जीव इह स्थितः । सर्वेन्द्रियाणि मनश्चक्षुः श्रोत्र जिह्वा घ्राण प्राण अपान व्यान उदान समान इहैवागत्यम् सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा । सान्निध्यं कुर्वन्तु स्वाहा | असुनीते पुनर् अस्मासु चक्षुः पुनः प्राणम् इह नो धेहि भोगम् | ज्योक् पश्येम सूर्यम् उच्चरन्तम् अनुमते मृलया नः स्वस्ति || ऐं ह्रीं क्लीं क्लीं ह्रीं ऐं । ॐ श्री दुर्गा प्राणशक्त्यै नमः । अत्र आगच्छ | आवाहिता भव | स्थापिता भव | सन्निहिता भव | सन्निरुद्धा भव | अवकुण्ठिता भव | देवि प्रसीद प्रसीद | देवि सर्व जगन्नायिके यावद् होमावसानकम् | तावत् त्वं प्रीतिभावेन अग्नौ च सन्निधिं कुरु |	jīva iha sthitaḥ sarvendriyāṇi manaś cakṣuḥ śrotra jihvā ghrāṇa prāṇa apāna vyāna udāna samāna ihaivāgatya sukhaṃ ciraṃ tiṣṭhantu svāhā | sānnidhyaṃ kurvantu svāhā | asunīte punar asmāsu cakṣuḥ punaḥ prāṇam iha no dhehi bhogam | jyok paśyema sūryam uccarantam anumate mṛlayā naḥ svasti || aiṃ hrīṃ klīṃ klīṃ hrīṃ aiṃ | oṃ śrī durgā prāṇaśaktyai namaḥ | atra āgaccha | āvāhitā bhava | sthāpitā bhava | sannihitā bhava | sanniruddhā bhava | avakuṇṭhitā bhava | devi prasīda prasīda | devi sarva jagannāyike yāvad homāvasānakam | tāvat tvaṃ prītibhāvena agnau ca sannidhiṃ kuru |

3. अब श्री दुर्गा परमेश्वरी को पंच तत्त्व अग्नि में समर्पित करें

एक चुटकी सिंदूर या चंदन अग्नि में डालें	ॐ नमश्चण्डिकायै गन्धं समर्पयामि	oṃ namaścaṇḍikāyai gandhaṃ samarpayāmi
एक पुष्प अग्नि में डालें	ॐ नमश्चण्डिकायै पुष्पं पूजयामि	oṃ namaścaṇḍikāyai puṣpaṃ pūjayāmi
अगरबत्ती जलायें और अग्नि को दिखायें	ॐ नमश्चण्डिकायै धूपं आघ्रपयामि	oṃ namaścaṇḍikāyai dhūpaṃ āghrapayāmi
दीपक को अग्नि को दिखायें	ॐ नमश्चण्डिकायै दीपं समर्पयामि	oṃ namaścaṇḍikāyai dīpaṃ samarpayāmi
भोग प्रसाद अग्नि में डालें (किशमिश या शहद)	ॐ नमश्चण्डिकायै नैवेद्यं समर्पयामि	oṃ namaścaṇḍikāyai naivedyaṃ samarpayāmi
पुष्प, सिंदूर और काले तिल को अग्नि में डालें	ॐ नमश्चण्डिकायै सर्वोपचारान् समर्पयामि	oṃ namaścaṇḍikāyai sarvopacārān samarpayāmi

4. अब श्री दुर्गा परमेश्वरी जो हवन की अग्नि में प्रतिष्ठित हैं, उन्हें नमस्कार करें और कहें:

ॐ श्रीदुर्गा परमेश्वरी देव्यै प्राणशक्त्यै नमः स्वाहा	oṃ śrī-durgā parameśvarī devyai prāṇaśaktyai namaḥ svāhā

5. अब प्रत्येक मंत्र के साथ, एक बूँद घी अग्नि में डालें :

ॐ महालक्ष्म्यै नमः स्वाहा	oṃ mahālakṣmyai namaḥ svāhā
ॐ महाकाल्यै नमः स्वाहा	oṃ mahākālyai namaḥ svāhā
ॐ महासरस्वत्यै नमः स्वाहा	oṃ mahāsarasvatyai namaḥ svāhā
महागणपती सहित षोडश मातृकायै नमः स्वाहा	mahāgaṇapatī sahita ṣoḍaśa mātrikāyai namaḥ svāhā
अष्टमातृकाभ्यः नमः स्वाहा	aṣṭa-mātrikābhyaḥ namaḥ svāhā
बं ब्राह्म्यै नमः स्वाहा	baṃ brāhmyai namaḥ svāhā
ऐं इन्द्राण्यै नमः स्वाहा	aiṃ indrāṇyai namaḥ svāhā
वं वैष्णव्यै नमः स्वाहा	vaṃ vaiṣṇavyai namaḥ svāhā
वं वाराह्यै नमः स्वाहा	vaṃ vārāhyai namaḥ svāhā
मं माहेश्वर्यै नमः स्वाहा	maṃ māheśvaryai namaḥ svāhā
कौं कौमार्यै नमः स्वाहा	kauṃ kaumāryai namaḥ svāhā
चं चामुण्डायै नमः स्वाहा	caṃ cāmuṇḍāyai namaḥ svāhā
नं नारसिंह्यै नमः स्वाहा	naṃ nārasiṃhyai namaḥ svāhā
कं कात्यायन्यै नमः स्वाहा	kaṃ kātyāyanyai namaḥ svāhā
Ashta Bhairava	
ॐ असिताङ्गभैरवाय नमः स्वाहा	oṁ asitāṅgabhairavāya namaḥ svāhā
ॐ रुरुभैरवाय नमः स्वाहा	oṁ rurubhairavāya namaḥ svāhā
ॐ चण्डभैरवाय नमः स्वाहा	oṁ caṇḍabhairavāya namaḥ svāhā
ॐ क्रोधभैरवाय नमः स्वाहा	oṁ krodhabhairavāya namaḥ svāhā
ॐ उन्मत्तभैरवाय नमः स्वाहा	oṁ unmattabhairavāya namaḥ svāhā
ॐ कपालभैरवाय नमः स्वाहा	oṁ kapālabhairavāya namaḥ svāhā

Kamakhya Bhairava Upasaka Foundation

ॐ भीषणभैरवाय नमः स्वाहा	oṁ bhīṣaṇabhairavāya namaḥ svāhā
ॐ संहारभैरवाय नमः स्वाहा	oṁ saṁhārabhairavāya namaḥ svāhā
ॐ बटुक भैरवाय नमः स्वाहा	oṃ baṭuka bhairavāya namaḥ svāhā
ॐ कालभैरवाय नमः स्वाहा	oṃ kālabhairavāya namaḥ svāhā
ॐ महाकाल भैरवाय नमः स्वाहा	oṃ mahākāla bhairavāya namaḥ svāhā
ॐ शिवाय नमः स्वाहा	oṃ śivāya namaḥ svāhā
ॐ सिंहाय नमः स्वाहा	oṃ siṃhāya namaḥ svāhā
ॐ अस्त्राय नमः स्वाहा	oṃ astrāya namaḥ svāhā
Parivāra Devata	
अष्टभैरवेभ्यो नमः स्वाहा	aṣṭabhairavebhyo namaḥ svāhā
सूर्यादि नवग्रहेभ्यॊ नमः स्वाहा	sūryādi navagrahebhyo namaḥ svāhā
गं गणपतये नमः स्वाहा	gaṃ gaṇapataye namaḥ svāhā
चण्डिकायै नमः स्वाहा।	caṇḍikāyai namaḥ svāhā
समस्त गृहदेवताभ्यो नमः स्वाहा।	samasta gṛhadevatābhyo namaḥ svāhā
समस्त स्थानदेवताभ्यो नमः स्वाहा।	samasta sthānadevatābhyo namaḥ svāhā
क्षं क्षेत्रपालकाय नमः स्वाहा	kṣeṃ kṣetrapālakāya namaḥ svāhā
यं योगिनीभ्यो नमः स्वाहा	yaṃ yoginībhyo namaḥ svāhā
धर्माय नमः स्वाहा	dharmāya namaḥ svāhā
अर्थाय नमः स्वाहा	arthāya namaḥ svāhā
कामाय नमः स्वाहा	kāmāya namaḥ svāhā
मोक्षाय नमः स्वाहा	mokṣāya namaḥ svāhā
श्री दुर्गा परमेश्वरी सहित सकल परिवार देवताभ्यॊ नमः स्वाहा	śrī durgā parameśvarī sahita sakala parivāra devatābhyo namaḥ svāhā
सकल आवरण देवताभ्यॊ नमः स्वाहा	sakala āvaraṇa devatābhyo namaḥ svāhā

Kamakhya Bhairava Upasaka Foundation

मुख्य आहुति

इस चरण में काले तिल वाले घी का प्रयोग होगा

प्रथम विकल्प: दुर्गा द्वात्रिंशनामावलि होम

इस विकल्प में प्रत्येक आहुति के साथ आप स्वाहा लगाकर माँ दुर्गा के एक नाम का उच्चारण करें और एक बूँद तिल-वाला घी अग्नि में डालें। माला या काउंटर का प्रयोग करके आहुतियों की संख्या का ध्यान रखें

न्यूनतम आहुति संख्या: 9 बार (9 x 32 आहुति) या जितनी भी संख्या का अनुष्ठान किया था उसका दशांश (1/10th)। जैसे 1000 दुर्गा द्वात्रिंशनामावलि का अनुष्ठान किया हो तो 100 बार आहुति (100 x 32 आहुति)

ॐ दुर्गायै नमः स्वाहा	oṃ durgāyai namaḥ svāhā
ॐ दुर्गार्तिशमन्यै नमः स्वाहा	oṃ durgārtiśamanyai namaḥ svāhā
ॐ दुर्गापद्विनिवारिण्यै नमः स्वाहा	oṃ durgāpadvinivāriṇyai namaḥ svāhā
ॐ दुर्गमच्छेदिन्यै नमः स्वाहा	oṃ durgamacchedinyai namaḥ svāhā
ॐ दुर्गसाधिन्यै नमः स्वाहा	oṃ durgasādhinyai namaḥ svāhā
ॐ दुर्गनाशिन्यै नमः स्वाहा	oṃ durganāśinyai namaḥ svāhā
ॐ दुर्गतोद्धारिण्यै नमः स्वाहा	oṃ durgatoddhāriṇyai namaḥ svāhā
ॐ दुर्गनिहन्त्र्यै नमः स्वाहा	oṃ durganihantryai namaḥ svāhā
ॐ दुर्गमापहायै नमः स्वाहा	oṃ durgamāpahāyai namaḥ svāhā
ॐ दुर्गमज्ञानदायै नमः स्वाहा	oṃ durgamajñānadāyai namaḥ svāhā
ॐ दुर्गदैत्यलोकदवानलायै नमः स्वाहा	oṃ durgadaityalokadavānalāyai namaḥ svāhā
ॐ दुर्गमायै नमः स्वाहा	oṃ durgamāyai namaḥ svāhā
ॐ दुर्गमालोकायै नमः स्वाहा	oṃ durgamālokāyai namaḥ svāhā
ॐ दुर्गमात्मस्वरूपिण्यै नमः स्वाहा	oṃ durgamātmasvarūpiṇyai namaḥ svāhā
ॐ दुर्गमार्गप्रदायै नमः स्वाहा	oṃ durgamārgapradāyai namaḥ svāhā
ॐ दुर्गमविद्यायै नमः स्वाहा	oṃ durgamavidyāyai namaḥ svāhā

Kamakhya Bhairava Upasaka Foundation

ॐ दुर्गमाश्रितायै नमः स्वाहा	oṃ durgamāśritāyai namaḥ svāhā
ॐ दुर्गमज्ञानसंस्थानायै नमः स्वाहा	oṃ durgamajñānasaṃsthānāyai namaḥ svāhā
ॐ दुर्गमध्यानभासिन्यै नमः स्वाहा	oṃ durgamadhyānabhāsinyai namaḥ svāhā
ॐ दुर्गमोहायै नमः स्वाहा	oṃ durgamohāyai namaḥ svāhā
ॐ दुर्गमगायै नमः स्वाहा	oṃ durgamagāyai namaḥ svāhā
ॐ दुर्गमार्थस्वरूपिण्यै नमः स्वाहा	oṃ durgamārthasvarūpiṇyai namaḥ svāhā
ॐ दुर्गमासुरसंहन्त्र्यै नमः स्वाहा	oṃ durgamāsurasaṃhantryai namaḥ svāhā
ॐ दुर्गमायुधधारिण्यै नमः स्वाहा	oṃ durgamāyudhadhāriṇyai namaḥ svāhā
ॐ दुर्गमाङ्ग्यै नमः स्वाहा	oṃ durgamāṅgyai namaḥ svāhā
ॐ दुर्गमतायै नमः स्वाहा	oṃ durgamatāyai namaḥ svāhā
ॐ दुर्गम्यायै नमः स्वाहा	oṃ durgamyāyai namaḥ svāhā
ॐ दुर्गमेश्वर्यै नमः स्वाहा	oṃ durgameshwaryai namaḥ svāhā
ॐ दुर्गभीमायै नमः स्वाहा	oṃ durgabhīmāyai namaḥ svāhā
ॐ दुर्गभामायै नमः स्वाहा	oṃ durgabhāmāyai namaḥ svāhā
ॐ दुर्गभायै नमः स्वाहा	oṃ durgabhāyai namaḥ svāhā
ॐ दुर्गदारिण्यै नमः स्वाहा	oṃ durgadāriṇyai namaḥ svāhā

दूसरा विकल्प: अर्गला मंत्र का होम

इस विकल्प में आप प्रत्येक आहुति के साथ स्वाहा लगाकर निम्न मंत्र का उच्चारण करें और एक बूँद तिल-वाला घी अग्नि में डालें। माला या काउंटर का प्रयोग करके आहुतियों की संख्या का ध्यान रखें।

न्यूनतम आहुति संख्या: 1 माला (108 बार)। 9 माला तक अपनी क्षमतानुसार कर सकते हैं (9 x 108 times)

ॐ जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते स्वाहा	oṃ jayantī maṃgalā kālī bhadrakālī kapālinī durgā kṣamā śivā dhātrī svāhā svadhā namo'stu te svāhā

पुनः पूजा

अब माँ दुर्गा का ध्यान करते हुए एक बार और अग्नि में पंचोपचार पूजा करें

एक चुटकी सिंदूर या चंदन अग्नि में डालें	ॐ नमश्चण्डिकायै गन्धं समर्पयामि	oṃ namaścaṇḍikāyai gandhaṃ samarpayāmi
एक पुष्प अग्नि में डालें	ॐ नमश्चण्डिकायै पुष्पं पूजयामि	oṃ namaścaṇḍikāyai puṣpaṃ pūjayāmi
अगरबत्ती जलायें और अग्नि को दिखायें	ॐ नमश्चण्डिकायै धूपं आघ्रपयामि	oṃ namaścaṇḍikāyai dhūpaṃ āghrapayāmi
दीपक को अग्नि को दिखायें	ॐ नमश्चण्डिकायै दीपं समर्पयामि	oṃ namaścaṇḍikāyai dīpaṃ samarpayāmi
भोग प्रसाद अग्नि में डालें (किशमिश या शहद)	ॐ नमश्चण्डिकायै नैवेद्यं समर्पयामि	oṃ namaścaṇḍikāyai naivedyaṃ samarpayāmi
पुष्प, सिंदूर और काले तिल को अग्नि में डालें	ॐ नमश्चण्डिकायै सर्वोपचारान् समर्पयामि	oṃ namaścaṇḍikāyai sarvopacārān samarpayāmi

पूर्णाहुति

1. निम्नलिखित प्रत्येक मंत्र के साथ, स्वाहा कहते समय एक बूँद घी अग्नि में डालें

ॐ भूः स्वाहा। अग्नये इदं न मम।	oṃ bhūḥ svāhā। agnaye idaṃ na mama।
ॐ भुवः स्वाहा। वायवे इदं न मम।	oṃ bhuvaḥ svāhā। vāyave idaṃ na mama।
ॐ सुवः स्वाहा। सूर्याय इदं न मम।	oṃ suvaḥ svāhā। sūryāya idaṃ na mama।
ॐ भूर् भुवः सुवः स्वाहा । प्रजापतये इदं न मम।	oṃ bhūr bhuvaḥ suvaḥ svāhā। prajāpataye idaṃ na mama।
ॐ श्री विष्णवे स्वाहा | विष्णवे परमात्मने इदं न मम ||	oṃ śrī viṣṇave svāhā | viṣṇave paramātmane idaṃ na mama ||
ॐ नमो रुद्राय पशुपतये स्वाहा | रुद्राय पशुपतये इदं न मम ||	oṃ namo rudrāya paśupataye svāhā | rudrāya paśupataye idaṃ na mama ||

Kamakhya Bhairava Upasaka Foundation

2. अब बाक़ी बचा सारा घी अग्नि में दाल दें और अग्नि को थोड़ा बढ़ने दें। आपको माँ दुर्गा की कोई भी आरती या प्रार्थना आती हो तो वो पढ़ सकते हैं जैसे - सिद्ध कुंजिका स्तोत्रम या अर्गला स्तोत्रम
3. यदि आपने पहले से पूर्णाहुति बना के नहीं रखी है तो अब बना लें। उसको अपने माथे पे लगायें और इस मंत्र को कहते हुए अग्नि में डालें:

ॐ पूर्णाहुतिं समर्पयामि।	oṃ pūrṇāhutiṃ samarpayāmi।

4. **बलि:** अब किशमिश को बलि के रूप में हवन कुंड के आसपास इस क्रम में इस मंत्र का उच्चारण करते हुए रखें: पहले 1 किशमिश पूर्व दिशा की और - फिर पश्चिम - फिर उत्तर - फिर दक्षिण - फिर दो किशमिश पूर्व और ईशान कोण (उत्तर-पूर्व) के बीच में रखें ।

पार्षद्भ्यो नमः। बलिं समर्पयामि।	pārṣadbhyo namaḥ। baliṃ samarpayāmi।

5. अब अग्नि में एक अंतिम आहुति डालें:

ॐ अग्नये नमः स्वाहा।	oṃ agnaye namaḥ svāhā।

6. ध्यान करें।
7. अब दाहिने हाथ में थोड़ा पानी लें और उससे छोड़ते हुए मानसिक रूप से ये कहें की आप ये पूरा हवन अपने गुरु को समर्पित कर रहें हैं।
8. फिर जब अग्नि बुझ जाए, तब उठ कर प्रणाम करें। बलि में चढ़ायी हुई किशमिश को किसी ऐसी जगह रख दें जगह जानवर उसे खा सकें।

[प्रकाशन तिथि: Mar 16, 2026]

Kamakhya Bhairava Upasaka Foundation